जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 8 अंक 78 • सितंबर, 2022
मूल्य : 25/- रुपए
ISSN 2456-2211

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

सितंबर 2022 **वर्ष-8 • अंक-78**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

फेसबुक : Kaksaad Patrika

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

7. लेखक के पास सुदृढ़ भाषा और संवेदी दृष्टि होनी चाहिए (**डॉ. कृष्णा श्रीवास्तव** से **कल्पना मनोरमा** की बातचीत)

12. कविताएँ : **डॉ. कृष्णा श्रीवास्तव**

उजला-कोना

14. यारी साहब : **कुसुमलता सिंह**

धरोहर

14. काव्य रचना : **यारी साहब**

लेख

16. पारधी समाज के रीति-रीवाज और परिवेश : **डॉ. योग्यता भार्गव**

19. सहरिया देव लोक : एक अध्ययन : **डॉ. वारिस जैन**

22. चालू मुहावरे के विरुद्ध जीवन का विस्तार : **उमाशंकर सिंह परमार**

26. बस्तर लोक पर्व से जुड़ी मान्यताएँ-अमुस तिहार : **भागेश्वर पात्र**

कहानी

24. ...कि तुम मेरी जिन्दगी हो : **पूरन सिंह**

30. स्मृति विस्मृति : **शीला मिश्रा**

38. सियाड़ी रस्सी : **रजनी शर्मा**

कविता/ग़ज़ल/दोहे

41. राघवचेतन राय 41. पुष्पा राही 42. तेज नारायण 42. सुशांत सुप्रिय 44. मीना सिन्हा 44. चित्रा पंवार 44. डॉ. गोपाल राजगोपाल 45. बाल स्वरूप राही 45. अंजलि सिफर

25. **यादें**

21. **कहावतें**

पुस्तक परिचय

33. किसका चेहरा पहना है : **हरेराम समीप**

37. देखा सा मंज़र : **आशीष दशोत्तर**

पुस्तक समीक्षा

46. थोड़ा समय निकाल लेना : **पवन चौहान**

47. दिसम्बर संजोग : **दीपक गिरकर**

लघुकथा

12. शिकायत : **डॉ. कृष्णा श्रीवास्तव**

48. **पत्र**

29. **क्या है ककसाड़?**

49. **सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति – द्वारिका परास्ते (गोंड कलाकार)
भोपाल, म.प्र. **मो.** 97547-81409

संपादकीय

हिंदी भाषा तथा ककसाड़ दोनों के लिए यह सितंबर का महीना कई मायनों में महत्वपूर्ण है। ककसाड़ के लिए यह महीना इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसी महीने ककसाड़ का विधिवत जन्म हुआ था, या यूँ कहें कि इसको लेकर काफी समय से चल रही योजनाओं परिकल्पनाओं ने सकार रूप लिया था। मतलब यह कि, इस महीने ककसाड़ अपने अनवरत प्रकाशन की संघर्ष यात्रा के आठवें वार्षिक पड़ाव पर पहुँच गया है। इन आठ वर्षों में ककसाड़ के बाह्य कलेवर में, पत्रिका के रचनाओं के स्तर में तथा विषयों की विविधता में कई महत्वपूर्ण सकारात्मक परिवर्तन हुए, परंतु पत्रिका का लक्ष्य तथा मूल स्वर सदैव अपरिवर्तित रहा और जनजातीय सरोकारों पर ही केंद्रित रहा रहा है।

इन आठ वर्षों में ककसाड़ के स्थूल स्वरूप के साथ ही इसके डिजिटल अवतार की पहुंच, संपूर्ण भारत के साथ ही विश्व के लगभग 43 देशों तक जा पहुँची है। आपको यह बताते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि भारत की सर्वोच्च पंचायत लोकसभा तथा राज्यसभा के वाचनालय में भी आपकी इस प्रिय पत्रिका को नियमित स्थान मिला है। इसके पीछे निश्चित रूप से पत्रिका 'टीम-ककसाड़' की श्रमसाध्य कठोर तपस्या तथा पत्रिका परिवार से आत्मीय परिजनों की भांति जुड़े हमारे बेहतरीन रचनाकारों का सतत अनमोल योगदान व हमारी ऊर्जा के मूल स्त्रोत हमारे प्रिय सुधी पाठकों का निशर्त अनमोल प्यार तथा समर्थन रहा है।

हिंदी के लिए यह महीना इसलिए महत्वपूर्ण है कि सितंबर 14 को यह देश हिंदी दिवस मनाता है। इस महीने भर हिंदी के सभी शुभचिंतक हिंदी भाषा की दुर्दशा पर "रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई, हा! हा! हिंदी/भारत दुर्दशा न देखी जाई" के तर्ज पर टेसुए बहाएंगे। शानदार हिंदी पखवाड़े मनाएंगे, हिंदी पर सेमिनार, कॉन्फ्रेंस, सम्मेलन होंगे। मंच सजेंगे, फ्लैक्स लगेंगे, शाल, श्रीफल, गुलदस्तों के लेन-देन होंगे, लंबे-लंबे उबाऊ भाषण होंगे,चाय समोसे मिठाई से गम गलत करेंगे। कुछ अति आशावादी वैश्विक हिंदी के लहराते परचम के गुणगान करेंगे। विदेशों में कहाँ-कहाँ हिंदी पढ़ी और पढ़ाई जा रही है इस पर गाल बजाएंगे। विश्व में चीन की मंदारिन भाषा के बाद दूसरे नंबर की सबसे ज्यादा पढ़ी तथा बोली जाने वाली भाषा का दर्जा हिंदी द्वारा हासिल करने पर अपनी पीठ थपथपायेंगे। ये सभी शूरवीर हिंदी पखवाड़ा तथा यह महीना खत्म होते, हिंदी को अगले साल के हिंदी-दिवस, हिंदी-पखवाड़े तक के लिए उसके हाल पर रोता बिलखता छोड़कर, सब अपनी अपनी राह पकड़ेंगे।

आजकल प्रायः कहा जाता है कि हिंदी का पूरे विश्व में बहुत तेजी से विकास हो रहा है, इसे कई देशों के विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाने लगा है, कई देशों में यह बहुसंख्यक प्रवासी भारतीयों की बोले जाने वाली प्रमुख भाषा है वगैरह वगैरह। पर हकीकत यही है कि धीरे-धीरे यह भाषा अपने ही देश में सुनिश्चित मृत्यु की और अग्रसर हो रही है। मुझे ध्यान में आता है कि भारत की आजादी के बाद, शुरुआती तीस वर्षों में गणित, विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा आदि सभी तकनीकी विषयों की शिक्षा, पढ़ाई विशुद्ध रूप से हिंदी में देने का गंभीर प्रयास किया गया था। तकनीकी शब्दों की प्रमाणिक शब्दावलियाँ बनाई गईं। हिंदी में इन तकनीकी विषयों की उच्च पढ़ाई हेतु पाठ्यक्रम तथा पुस्तकें तैयार की गईं। इन तकनीकी विषयों को छात्र अपनी भाषा हिंदी में पढ़ने भी लगे थे। पर जाने क्या हुआ, धीरे-धीरे पहिया उलटी दिशा में घूमने लगा। इच्छाशक्ति की कमी तथा सहज मार्ग के अनुसरण की प्रवृत्ति को भी इसका प्रमुख कारण कहा जा सकता है। 70 के दशक के बाद धीरे धीरे पूरे देश में शिक्षा के नाम पर कुकरमुत्ते की तरह उग आए पब्लिक स्कूलों, कालेजों को भी इसका बड़ा श्रेय जाता है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में इंटर तक के सभी स्कूलों को आत्मानंद स्कूल के नाम पर अंग्रेजी मीडियम किया जा रहा है। जिसका जनता के द्वारा स्वागत भी हो रहा है। अभी इसी हफ्ते